लतिका सुमन

Even, after all this time

The sun never says to the earth.

You owe me

Look,what happens

With a love like that,

It lights the whole sky.-(Hafiz)

प्यार का क्या कोई दिन होता है ?प्यार और रोमान्स तो हर दिन के लिए है.पती-पत्नी जैसे-जैसे एकदुसरे को समझने लगते है.एकदुसरे के साथ कम्युनिकेशन करते है.वैसे-वैसे प्यार तो बढता ही जाता है.फिर व्हेलेंटाईन डे का कोई एक दिन नही होता.वह तो रोज होता है.पती-पत्नी को हरदिन रोमान्स और उत्साह के साथ ही जीना चाहिए.पता नही कल क्या होगा ?फिल्म दिग्दर्शक कार्तिकेयन किरुभाकरन का यह कहना है.तो उनकी प्रोड्युसर पत्नी और फिल्म अभिनेत्री अश्विनी प्रताप पवारने हाफिज की ऊपर दी हुअी कविता का अर्थ सुनाते हुए अपनी भावनाओ को व्यक्त किया,इतने वर्षोमें कभी सुर्य ने पृथ्वीसे नही कहा की,तुम मेरी ऋणी हो.देखो,उनके प्यार का नतिजा.जिसने पुरे आकाश को प्रकाशित किया.यह कहते हुए अश्विनी ने सवाल किया,क्या पति-पत्नी के प्यार का कभी हिसाब होता है ?

कार्तिकेयन किरुभाकरन और अश्विनी पवार की फिल्म **हिज फादर्स व्हा**इस का शो मुंबई के रॉय़ल ऑपेरा थिएटर में दिखाया गया.फिल्ममें भारतीय और विदेशी संगित का सुंदर मिलाफ ,पेंटींग्स्, क्लासिकल नृत्य वह भी भरतनाट्यम.साथमें गिटार की धुन और जुडा विदेशी परीवार.जिसकी कथा बाप और बेटे के संबंधोंपर आधारीत है.इस फिल्म को देखने के लिए मुंबई के ऑपेरा थिएटर में फिल्म जगत के कुछ विचारवंत डायरेक्टर,क्लासिकल डान्सर,विदेशी गेस्ट और जाने माने मान्यवरोंके साथ दर्शक भी उपस्थित थे.फिल्म बहोतही खुबसुरत ढंगसे बनायी गयी.ऐसा सभी मान्यवरोंका कहना था.दिग्दर्शक आशुतोष गोवारीकर,टिनु आनंद, गौरी शिंदे ,ॲडगुरु प्रल्हाद कक्कर के साथ उपस्थित देशी-विदेशी दर्शकोंने फिल्म की बहोतही तारीफ की.एक दर्शकने तो उत्साहमें आकर यह भी कहा की,यह फिल्म ऑस्कर फिल्म ॲवार्ड से जरुर सम्मानित होगी.

फिल्म बाप-बेटे के रिश्तेपर जरुर है,लेकिन दो अलग रिश्ते भी दिखायी दे रहे है.एक भारतीय कपल और दुसरा विदेशी कपल.साथमें एक नृत्य नाटिका जुडी है.जो भगवान श्रीराम और सीता के प्यार को समझने की कोशिशमें है. फिल्म बहोत ही खुबसुरत तरीकेसे बनायी गयी है.सामने दिखाई देनेवाले दृश्य फिल्मके नही,बल्की हमारे सामने ही घट रही कोई घटना हो ऐसा महसुस करवाते है.फिल्म देखनेपर यह कल्पनाही अद्भुत लगती है.क्या इतनी खुबसुरत कलाकृती नृत्य,संगीत,पेंटींग्ज और भारतीय कल्चर के साथ कहानीमें जोडी जा सकती है ?

यह कल्पना कैसे सुझी ? फिल्म का उद्दीष्ट क्या था ?दिग्दर्शक कार्तिकेयनने अभियानसे बात करते हुए कहा की,आज हम हमारे आस-पास एक ऐसा माहोल महसुस कर रहे है.जिसमें एक दरार आ गयी है.यह तेरा है और यह मेरा है.यह भावना बढने के कारण समाजमें दो लोगों के बीच या संबंधों के बीच एक दिवार खडी हो गयी है.जिसकी शुरुआत पहले हमारे घर से होती है.क्योंकी पति और पत्नी के बीच का संवाद खत्म हो रहा है.एकदुसरे की भावनाओं को महसुस करना भी कम होता जा रहा है.हम बात किए बिना ही एक जजमेन्टपर पहुंच जाते है.जिससे रिश्ता बनने के बजाए बिगडता ही जाता है.उदाहरण देते हुए कार्तिकेयनने अपनी बातों को जारी रखा.

कार्तिकेयनने कहा,फिल्म में एक विदेशी कपल है क्लारा और जॉन.यह परीवार भारत में अपने बेटे क्रिस के साथ रहता है.उन्हें भारतीय संगीत और यहांके कल्चरसे बहोत प्यार है.क्लारा को भी पसंद है,लेकिन धीरे-धीरे उसे महसुस होने लगा की,बेटा क्रिस भी इससे जुड गया है.वह नृत्य सीख रहा है.गाना गा रहा है.जॉनने भी भारतीय संगीत को ऐसा अपना लिया की,वह उसीमें डुब गया है.अब बेटा भी वैसा ही होगा ?यह उसके चिंता का विषय है.वह जॉन को छोडकर बेटे को लेकर विदेश चली जाती है.अब झगडा छोटीसी बात का है की,किसे क्या पसंद है और क्या नही पसंद है ?इसे एकदुसरेसे बात करके सुलझाया जा सकता था,लेकिन सुलझने के बजाए,यह छ़ोटासा झगडा बडा हो गया और रिश्ता बनने के बजाए बिगड गया.हमारे समाजमें भी आज वैसा ही हो रहा है.जो बात बोलकर समझायी जा सकती है,वह जजमेन्टपर पहुंचकर बिगड जाती है.एकदुसरे को समझने की क्षमता कम हो रही है.जैसे जॉन को क्लारासे प्यार है,लेकिन वह प्यार क्लारातक पहुंचाने में जॉन असमर्थ है.क्योंकी उसका पत्नीसे बात करने का तरीका ही गलत है.वह कहता है.क्यों जा रही हो ?मत जाओ ?अगर हमारे दोनों के बीच झगडा है,तो बच्चे को पार्वती(जॉन की गुरू)के पास छोड दो.जिसकारण वह हमारा रोज का झगडा नही सुनेगा.यह बात ही गलत है.क्योंकी इन शब्दोसे लाराके इगोको ठेस पहुंच रही है,जिससे वह अधिकार के भूमकि में आ गयी है की,मैं मां हुं.वह पतिसे कम्युनिकेशन किए बिना ही बेटे को लेकर विदेश जाती है. बात छोटीसी है,लेकिन इस छोटीसी बात ने दोनो के बीच दिवार खडी कर दी.कोई भी रिश्ता टिकाने के लिए खुबसुरत बनाने के लिए उसपर मेहनत करने की जरुरत होती है.उसपर काम करने के लिए वक्त देने की जरुरत है.जो आज नही हो

रहा है.इसलिए परीवार टुट रहा है.जिसका गहरा असर हमारे समाज में भी दिखायी दे रहा है.मां बाप बच्चो के लिए रोल मॉडेल बनने के बजाए बॅड एक्झाम्पल साबित हो रहे है.

फिल्म लिखते समय इसतरह की कोई घटना आपके आसपास हो रही थी क्या? जबाब में कार्तिकेयनने कहा की,इसतरहके कई उदाहरण रोज हमारे आस-पास घटते है.बिना समझे,एकदुसरेसे बिना बात किए जलस होना.हम देखते ही है.जैसे हमने फिल्ममे देखा की,क्लारा को पार्वतीपर गुस्सा है.पार्वती जॉनकी गुरु है,फिर भी क्लारा उस रिश्ते को समझ नही पा रही.क्योंकी वह कम्युनिकेशन नही कर रही है.अब जॉनको जरुरत है की,कोई उसे समझे.जिसपर वह ट्रस्ट कर सके.उसवक्त ऐसी एक ही व्यक्ती है उसकी गुरु पार्वती.लेकिन पार्वती को भी वह अपनी फिलिंग्स कैसे बताएगा ?वह पत्नी के बर्ताव से अस्वस्थ है.इसलिए रात को गिटार लेकर निकला है.क्योंकी पत्नी उससे बात नही करना चाहती.जॉन अपने अंदर चल रहे भावनाओंको किसी भी तरहसे बाहार निकालना चाहता है.गिटार की धुनपर गाकर.जो उसके अंदर चल रहे द्वंद्व को समझ सके.जो उसपर विश्वास करता हो.चांदनी रातमें चंद्रमा का आनंद लेती बैठी पार्वती.घरसे बाहार निकले जॉनको गिटारपर राग हेमावती की धुन बजाते हुए सुन रही है.वह गाने लगता है.पार्वती उस गानेपर भारतनाट्यम कर रही है.क्योंकी पार्वतीने कलाको ईश्वर से जोडा है.वह जॉनसे नही कहती की,तुम मत गाओ.क्योंकी उसके दर्द को वह समझ रही है.गुरु है.जानती है.लेकिन वह भी जॉन को कैसे समझाएगी की,मैंने तुम्हारे दर्द को सुना है,उसे महसुस किया है.इसलिए उसी रात के समयमें उसे सामने खडा करके पार्वती उसका पेंटींग बनाती है.जो क्लारा को खटकता है.पार्वती का पति जब वही पेंटींग देखता है.तब वह दोनों के बीच के रिश्ते को महसुस करता है.क्योंकी वह भी एक कलाकार है,डान्सर है.उसमें कोई जलस की भावना नही होती.लेकिन क्लारा जॉनको छोडकर बेटे के साथ विदेश चली जाती है.अब जॉन भी क्लारा को रोक सकता था.क्योंकी वह क्लारा से प्यार करता है.लेकिन उस प्यार को पत्नीतक पहुंचाने की क्षमता उसकी बातों में नही है.वह उस रिश्तेपर मेहनत नही कर रहा है,इसलिए उसका प्यार क्लारा को महसुस नही हो रहा है.दोनोमें संवाद ठिकसे ना होने के कारण एक परीवार बिछड गया.जिसका परीणाम उस बच्चेपर हुआ.जो मां-बाप के गलतफहमियों का शिकार हुआ.वह भी उसी दर्द के साथ जी रहा है.मां-बाप के ख्यायालात बेटे के सामने प्रश्न बनकर रह गए.इसतरह के मानसिकता से हमारे आसपास कई बच्चे गुजर रहे है और यही मानसिकता मैंने फिल्म में दिखायी.

क्या ऐसा कोई म्युझिशियन आपने देखा है ?जो विदेश से भारत आए और फिर इसी कल्चर के साथ जुड गए ?हां,कर्नाटक और चेन्नई में बहोत ही है.कार्तिकेयनने एक नाम का जिक्र करते हुए कहा की,जॉन हिंगिन्स का उदाहरण तो बहोत बडा है.जो अमेरीका से भारत आए,उनको कर्नाटक म्युझिक में इंटरेस्ट हुआ.वह जब कर्नाटकी संगित में गणेशस्तुति या शिवस्तुती गाते है,तो आंखों से पानी आता है.वह कोई भी राग गाएंगे,तो पता नही चलेगा की,यह कोई भारतीय गायक गा रहा है या विदेशी गा रहा है ?

भारतीय कल्चर की क्या विशेषता है ?कार्तिकेयनने जबाब दिया,यहां का कल्चर युनिक है.वह हरतरहसे हमारे अंग-अंग में और हमारे बर्ताव में बसा हुआ है.अगर आपके घरपर कोई आएगा.तो सबसे पहले आप उसे पानी पुछोगे.कभी-कभी तो पुछोगे भी नही.सीधे लेकर आओगे.प्यार से बिठाओगे.वह अनजान भी हो तो उससे प्यार से पेश आओगे.अगर आप ट्रेन में सफर कर रहे हो,तो साथमें बैठे लोग भी सफर खत्म होनेतक आपके परीवार जैसे बन जाते है.आप उनसे इतनी बाते करते हो की,आपका सफर आसानी से कट जाता है.हमारे घर कोई विदेशी आएगा.तो उसे ऊपर बिठाओगे.उसे खाना दोगे.अगर उसे हाथ से नही खाने आ रहा है,तो चम्मच देते हो.हम अपनी बाते किसीपर थोपते नही है.यही हमारे कल्चर की विशेषता है.

कार्तिकेयन और अश्विनी दोनों कलासे जुडे है.जिसतरह से फिल्म बनानी सोची थी,उसका बजेट बहोतही बडा था.फायनान्सर ढुंढने भी वक्त लग जाता,इसलिए कम बजेट और वह भी पाँडेचरी के पास खुदके छोटेसे घर में एक टिम के साथ मिलकर बहोत ही प्रेम से एक बडी कलाकृती का निर्माण किया गया .यह भी पति-पत्नी का प्यार है.जिन्होंने प्यारसे एक खुबसुरत कलाकृती को जन्म दिया.बहोतही सोच-समझकर भारतकी कला और भारत की संस्कृती को दुनिया के सामने फिल्म के माध्यमसे दिखायी गयी है.इंटरनॅशनल फिल्म होने के कारण फिल्म की भाषा अंग्रेजी है.फिल्ममें देशी –विदेशी कलाकार है,लेकिन कार्तिकेयन का कहना है की,यहां देशी-विदेशी का सवाल ही नही है.यह कलाकार एक इंसानियत के रिश्ते और कला के माद्यम से जुडे है.इसलिए हम इसे भारतीय फिल्म की दृष्टीकोनसे ही देखेंगे.जिसने भी इसमें काम किया है.वह हमारे दिलसे जुडा है.इसमें अमेरीकन कलाकार जेरेमी रोस्के,स्वीस कलाकार जुलिया कोच,बेटोंके रोल में दो कलाकार इजरायलसे है,बेटियों में एक कलाकार आशा भोला गुजरातसे है.पी.टी.नरेंद्रन केरलासे है,कोई चेन्नई से है,तो अश्विनी पवार महाराष्ट्रसे है.कला और कलाकार की कोई सीमा नही है.

अश्विनी पवार ने कहा की,हम जो भी करते है.वह दिलसे करते है.हमें कुछ अलगसा करना था.इसलिए हमने किया.पति-पत्नी का प्यार उनके काम के आदर करनेसे भी बढता है.हम हमेशा काम के कारण साथ में रहते थे.ऐसा नही है की,पति-पत्नी में झगडे नही होते या मतभेद नही होते है.लेकिन एक दुसरे के साथ बंधे रहना है,तो उसीवक्त समझ लेना चाहिए की,रिश्तेपर कोई धुल जम रही है.अगर उसी वक्त उस धुल को साफ किया जाए.तो प्यार बढता ही रहेगा.

फिल्म में श्रीराम और सीता की नृत्यनाटिका क्यों दिखायी है ?बातों को खत्म करते हुए कार्तिकेयनने जबाब दिया, नृत्यनाटिका के माध्यमसे उनके बीचके संबंध की विशालता को रखना जरुरी था.जब मैंने कवी भवभुती का उत्तर रामचरीतमानस पढा.तब उन्होंने जो कुछ सीता के बारे में लिखा है.उसमें

सीता मुझे बहोत ही पॉवरफुल कॅरेक्टर लगा.जब रामने सीता को वन में छोड दिया.तब वह मां बननेवाली थी.रामको कितनी तकलिफ हुअी होगी ?लेकिन उन्होंने यह नही सोचा की,मैं अपने पत्नी को वन में कैसे छोडुं ?उसके साथ कुछ भी हो सकता था ?रामने प्रजा का सुनकर यह निर्णय लिया.दुनिया को राममें गलती नजर आ रही है की,रामने एक स्त्री के साथ बुरा व्यवहार किया,लेकिन सीता को राम गलत नही लगे.क्योंकी जब श्रीराम दुबारा अपने राज्यमें सीता को लव-कुश के साथ वापस ले आते है,तब प्रजा उनका स्वागत करती है.इसपर भी हम प्रश्न उठाते है की.सीता ने राम को क्षमा नही करनी चाहिए थी.लेकिन सीता को राम की गलती ही नही लगी.तो क्षमा मांगने का या करने का सवाल ही नही उठता.वह कहती है की,प्रजा के हित में जो श्रीराम को ठिक लगा,वह उन्होंने किया.इनके प्यार में इतनी ताकद थी की,आज भी हम सीताराम,सीताराम गुनगुनाते है.राम के पहले सीता का नाम आता है.इनका प्यार आज भी अमर है.